निनाद ललित कला समिति छिन्दवाडा

अध्यक्ष–आनंद बक्षी

लोकमत समाचार

गमों ने बांट लिया है मुझे यूं आपस में...

छिंदवाड़ा,३० जनवरी (लोस सेवा).

परंपरागत गायिकी-के सरताज पं. अश्वनी वर्मा की गजलों से सजी शुक्रवार की शाम शहरवासियों के लिए यादगार बन गई. शहर के संगीत जगत में लंबे अर्से से छाई खामोशी को तोड़ते हुए निनाद ललित कला समिति ने जिस गीत, गजल संध्या का आयोजन किया, उसकी यादें शहरवासियों के जेहन में लंबे अर्से तक ताजा रहेंगी. देर रात तक पं. अश्वनी वर्मा के सुरों में सजा गजलों का कारवां चलता रहा और श्रोता भी सुरों की मदहोशी में खोकर वाह-वाह करते रहे. संगीत संध्या का आगाज पं. अश्वनी वर्मा ने रागदेस में कबीर के भजन चदरिया भीनी-भीनी से किया. राग देस में ही अगली गजल थी 'कभी साया कभी धूप मुक्कद्दर मेरा होता रहता है यूं ही दर्द बराबर मेरा' इस गजल के बाद श्रोताओं द्वारा वाहवाही का जो दौर प्रारंभ हुआ वह देर रात तक जारी रहा. पं. अश्वनी वर्मा के साथ सितार पर एस.आर. शिवलीकर ने, गिटार पर इकबाल अहमद ने एवं तबले पर सतीश मिश्रा ने संगत की. कार्यक्रम का संचालन आयोजक आनंद बक्षी ने किया.

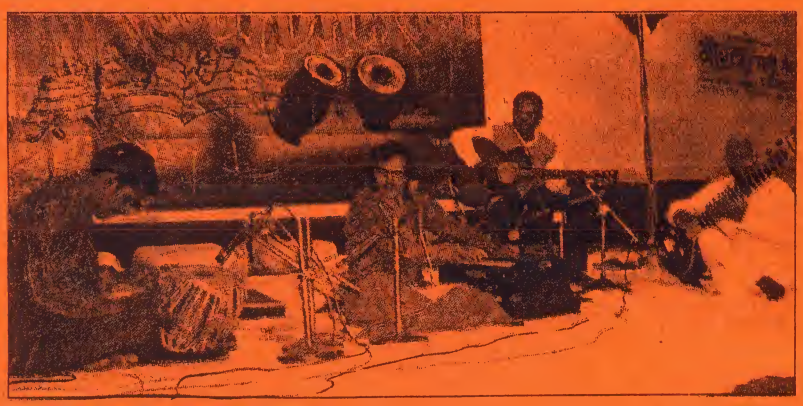

छिंदवाड़ा में गीत की प्रस्तुति देते पं. अश्वनी वर्मा.

इनका हुआ सम्मान : गीत गजल संध्या के अवसर पर विधायक दीपक सक्सेना के मुख्य आतिथ्य में सम्मान समारोह का आयोजन भी किया गया. इसमें नवीन दूाड़, डॉ. आर.एच. बग्गा, मेजर डॉ. राकेश श्रीवास्तव, श्रीमती विस्मिता शाह, मो. यूनुस, तरंग सिंह परिहार का सम्मान शाल एवं श्रीफल और स्मृति चिह्न भेंट कर किया गया. अतिथियों एवं कलाकारों का सम्मान आनंद बक्षी, आशीष त्रिपाठी, हाजी नसीमुद्दीन खान, शाहिद खान, जेड अली, सुरेश डेहरिया, नंदू बारापात्रे आदि ने किया.

राज एक्सप्रेस

ग़ज़ल इबादत है, मनोरंजन नहीं : अश्विनी

■ राज न्यूज नेटवर्क

छिंदवाड़ा । गजल मनोरंजन का नहीं बल्कि इबादत का साधन है। आज के दौर में पुरानी गायकी फिर वापस आ रही है। श्रोता पुरानी अर्थपूर्ण गजलों के प्रति आकर्षित हुए है। मै कह सकता हूं कि जमाना फिर पुरानी गजलों की ओर लौटेगा।

उक्त आशय की बात निनाद कला समिति की गजल संध्या में अपनी गायकी का हुनर दिखाने आए भिलाई के रहने वाले विख्यात गजल गायक अश्विनी वर्मा ने कही। उन्होंने कहा गजल मूल रुप से सूफी गायकी है जिसमें लयकारी और इबादत होती है।

इसमें इश्क मोहब्बत खुदा से की जाती है। उन्होंने कहा कि सूफी अब गायकी नहीं बल्कि शब्द हो गया है। सूफी उन्हें कहा जाता था जो खुदा से मोहब्बत में गायकी करते है।

गजल हमेशा रागों से बंधकर और दिल से गायी जाती है इसमें उर्दू शब्द और बंदगी होती है।

आज की गजल स्त्री प्रधान हो गई है जो ठीक नहीं । उन्होंने कहा बेगम अख्तर और मेहंदी हसन सच्चे गजल गायक है। गजल में जिंदगी की हकीकत बयान होती है न कि स्त्री की कहानी। व्यवसायीकरण के दौर में गजल भी व्यवसायिक हो गई है। इसमें शायरों की गलती नहीं है।

10 लाख से ज्यादा गज़लों का संग्रह

अश्विनी कुमार ने बताया कि उनके पास गजल का पौने दो सौ सालों का इतिहास है। और लगभग 10 लाख गजलों का संग्रह है। अश्विनी कुमार का घराना गजल से जुड़ा है और पीढ़ी दर पीढ़ी उनका परिवार गजल गायकी से जुड़ा हुआ है। आज उन्होंने गजल संध्या में शास्त्रीय गायन से पुरानी गजलों का जादू चला दिया। समिति के आनंद बक्षी ने कहा अश्विनी कुमार के छिंदवाड़ा आने से जिले में ख्यातिनाम घरानों के गजल गायकों के आने का रास्ता बन गया है आने वाले समय में जिले के संगीत प्रेमियों को गजल के बड़े फनकारों की गायकी से रुबरु होने का मौका मिलेगा।